अध्याय 04

उपनिवेशवाद एवं आदिवासी समाज

भारत में प्रारम्भिक आक्रमणकारियों और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों में मुख्य अंतर यह था कि अंग्रेजों के अतिरिक्त किसी अन्य प्रारम्भिक आक्रमणकारी ने न ही भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना में परिवर्तन किया और न ही धन की निरंतर निकासी का सिद्धान्त अपनाया। भारत में ब्रिटिश शासन के फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था, उपनिवेशी अर्थव्यवस्था के रूप में रूपांतरित हो गयी तथा भारतीय अर्थव्यवस्था की सभी नीतियाँ एवं कार्यक्रम उपनिवेशी हितों के अनुरूप बनने लगी।

भारत में परम्परागत हस्तशिल्प उद्योग का ह्रास इसलिए नहीं हुआ कि यहाँ औद्योगीकरण या औद्योगिक क्रांति हुई बल्कि यह ह्रास अंग्रेजी माल के भारतीय बाजारों में भर जाने से हुआ। भारतीय हस्तशिल्प, अंग्रेजों के सस्ते माल का मुकाबला नहीं कर सका। जहाँ एक ओर भारतीय हस्तशिल्प उद्योग तेजी से पतन की ओर अग्रसर था, वहीं दूसरी ओर इस काल में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति तेजी से फल–फूल रही थी।

सामाजिक संरचना—अठारहवीं सदी के अन्त तक, भारत के अधिकांश आदिवासी और जनजाति जंगल और पहाड़ी इलाको में रहते थे। ये जंगल में उपजे फल, कंद–मूल पर आश्रित थे। वे पुशपालन करते थे। खेती के लिए वे जंगली भूमि को साफ कर ज्वार, बाजरा, धान, मक्का तथा कई प्रकार की दालें उगाते थे। फसल हो जाने के बाद वे भूमि को कई वर्षों तक खाली छोड़कर दूसरी जगह चले जाते थे। भूमि की उर्वरता पुनः उत्पन्न हो जाने पर वे वापस आकर उसपर फिर फसल उगाने का काम करते थे। इस प्रकार वे झुम खेती करते थे। खेती के अलावा वे जंगल से लकड़ी का कोयला (काठकोयला) बनाते थे। जंगल से रेशम का कोया। तथा पेड़ों से निकलने वाले राल (गोंद) भी इकट्ठा कर बाहरी (मैदानी) लोगों को बेचते थे। वे जंगली जानवरों का शिकार करते थे। वे जंगलों में उपलब्ध जड़ी–बूटियों का उपयोग करते थे। वे कुसुम तथा पलास के फूलों को बुनकरों और चमड़ा कारीगरों को बेचने का काम भी करते थे। इन फूलों से रंग बनाया जाता था जिससे बुनकर तथा मोची अपने द्वारा बनाई गई वस्तुओं को रंगते थे।

कम्पनी की विस्तार नीति से भारत की प्रशासनिक तथा आर्थिक व्यवस्था में भी परिवर्तन हुए। 19वीं सदी से आदिवासियों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में भी कई बदलाव हुए। बदलते परिवेश में जनजातियों को झूम खेती के स्थान पर स्थायी रूप से खेती करने के लिए बाध्य होना पड़ा। कालांतर में इनमें से कई भूमि के स्वामी और अधिक ताकतवर हो गए। परन्तु स्थायी खेती से आदिवासियों का नुकसान भी हुआ। स्थायी खेती ने बाहरी लोगों को जंगल की भूमि की तरफ आकर्षित किया। इन बाहरी लोगों (आदिवासी इन्हें दीकू कहते थे, का उद्देश्य जनजातियों की भूमि को अपने अधीन कर इनको बंधुआ मजदूर बनाना होता था।

© JCERT not to be republished

आदिवासी अपने को जंगल की संतान मानते थे। जंगल से उनकी प्राय: सभी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थी। खाद्य सामग्री और जड़ी-बूटी के अतिरिक्त जलावन और घर बनाने के लिए उन्हें जंगल से लकड़ियाँ मिल जाती थीं। उनके उद्योग भी जंगल में पाई गई वस्तुओं पर आधारित थे। महिलाएँ घरों में बुनाई व चटाई बनाने का काम करती थीं। जंगल पर वे अपना हक समझते थे और अपने को उसका रक्षक मानते थे।

19वीं सदी में अंग्रेज चिकित्सक फ्रांसिस बुकानन (1794-1815) ने कई आदिवासी क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया था। बुकानन के अनुसार, आदिवासी लोग पहाड़ी तथा जंगली भूमि को अपनी निजी संपत्ति मानते थे। अपने क्षेत्र से वे मजबूती से जुड़े हुए थे। प्रत्येक जनजाति कबीले का अपना मुखिया होता था, जो लोगों की रक्षा करता था। आपसी झगड़ों को मुखिया सुलझाता था। इनके अपने रीति-रिवाज होते थे, जो मैदानी समाज से भिन्न होता था। इनमें जाति भेदभाव की भावना नहीं होती थी, परन्तु सामाजिक तथा धार्मिक भेद होता था।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(1) .... ने धन की निरंतर निकासी का सिद्धान्त अपनाया।

(2) कुसुम तथा पलास के फूलों से .... बनाया जाता था।

(3) आदिवासी बाहरी लोगों को .... कहते थे।

(4) आदिवासी अपने को जंगल की .... मानते थे।

(5) आरम्भ में आदिवासी .... खेती करते थे।

(6) जंगल पर वे अपना हक समझते थे और अपने को उसका .... मानते थे।

(7) आदिवासियों के रीति-रिवाज मैदानी समाज से .... होता था।

उत्तर—(1) अंग्रेजों, (2) रंग, (3) दीकू, (4) संतान, (5) झूम, (6) रक्षक, (7) भिन्न।

उपनिवेशवाद के खिलाफ झारखंड के आदिवासी का संघर्ष

अंग्रेजों को भी आदिवासी बाहरी लोग यानी दीकू कहते थे। कई ब्रिटिश अधिकारियों ने पहाड़ी तथा जंगली इलाकों का दौरा किया और यहाँ बसे लोगों की जानकारी लेने का प्रयास किया। जनजातियों को नियंत्रण में रखने के लिए अंग्रेजों ने मुखियाओं से समझौता किया। उन्हें भूमि का स्वामी मानते हुए वार्षिक भत्ता देने का प्रस्ताव रखा। परन्तु अधिकांश ने सत्ता लेने से इनकार कर दिया, क्योंकि इनसे उनकी स्वतंत्रता का हनन होता था। इससे वे अंग्रेजों के अधीन हो जाते। ऐसे मुखियाओं ने अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन किया।

जनजातियों के आक्रोश का एक और कारण था रेल लाइनों और रेल डिब्बों के लिए लकड़ियों की आवश्यकता हुई, इमारतें, जहाजों और खदानों के लिए भी लकड़ियों की जरूरत पड़ी। जिससे जंगल के पेड़ काटे जाने लगे। जनजातियों ने इसका विरोध किया। अत: सरकार ने वन विभाग बनाया (1864) तथा

© JCERT not to be republished

वन अधिनियम (1865) पारित किया। पेड़ों की कटाई पर रोक लगाई गई। जंगलों पर से आदिवासियों के अधिकार समाप्त कर दिए गए। इस प्रकार जंगलों पर आश्रित रहने वानी जनजातियों में असंतोष उत्पन्न हुआ।

ठेकेदार और साहूकारों ने जनजातियों को कर्ज देकर अपना मजदूर बना लिया था। अनपढ़ होने के कारण कर्ज की रकम को वे पढ़ नहीं पाते थे। जिससे वे सदा के लिए ठेकेदारों पर आश्रित हो गए। कभी–कभी कर्ज चुकाने के लिए उन्हें अपनी जमीन, पशु, हल–फाल आदि ठेकेदारों को देना पड़ता था। ईसाई मिशनरियों ने जनजातियों में शिक्षा का प्रयास किया और उन्हें ईसाई भी बनाया जिससे उसकी सांस्कृतिक पहचान समाप्त होने लगी। अंग्रेजी सरकार, ठेकेदार मिशनरी सब ने जनजातियों को आंदोलन के लिए विवश किया।

कोल विद्रोह

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के करीब 26 वर्ष पहले ही झारखण्ड की जनजातियों ने अंग्रेजी उपनिवेशवाद के खिलाफ विद्रोह किया था। झारखण्ड की सांस्कृतिक पहचान का राजनीतिक अर्थ भी पहली बार 1831 के कोल विद्रोह से उजागर हुआ था। उसमें मुंडा, हो, उरॉव, भुइयां आदि जनजाति शामिल हुई। इस विद्रोह के केन्द्र थे रॉची, सिंहभूम और पलामू। ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ यह संभवतः पहला विराट आदिवासी आंदोलन था। इतिहासकार इस विद्रोह को झारखण्ड क्षेत्र का विकराल अघात मानते है। हालांकि इसके पूर्व 1783 में तिलका मांझी विद्रोह और 1795-1800 में चेरो आंदोलन पूरे झारखण्ड क्षेत्र में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ सुलगती फैलती आग की संकेत दे चुके थे। तिलका मांझी ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ संघर्ष की चेतना फैलाने वाले आदि विद्रोही थे। उन्होंने 1772 में जमीन जंगल व फसल पर परम्परागत अधिकार के लिए संघर्ष छेड़ा। उनके नेतृत्व में संघर्ष का संदेश गाँव–गाँव में सखुआ का पता घुमाकर किया जाता था। 1785 में तिलका मांझी को भागलपुर में फाँसी दी गई। वह स्थान आज भागलपुर में तिलका मांझी चौक के नाम से जाना जाता है।

कोल विद्रोह के पूर्व 1795-1800 तक तमाड़ विद्रोह, 1797 में विष्णु मानकी के नेतृत्व में बुंडू में मुंडा विद्रोह, 1798 में चुआड़ विद्रोह, 1798-99 में मानभूम में भूमिज विद्रोह और 1800 में पलामू चेरो विद्रोह ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की अटूट श्रृंखला कायम कर दी थी।

छोटानागपुर क्षेत्र में हुए कोल विद्रोह के नायक थे सिंदराय और विंदराय मानकी। यह विद्रोह 11 दिसम्बर, 1831 को फूट पड़ा। 19 मार्च, 1832 को कैप्टन विल्किंसन के नेतृत्व में सेना की टुकड़ियों ने इस विद्रोह को दबा दिया।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्न—

(1) भारत के स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम कब हुआ ?

(क) 1856 (ख) 1857 (ग) 1858 (घ) 1859

(2) कोल विद्रोह कब हुआ ?

(क) 1829-30 (ख) 1830-31 (ग) 1832-34 (घ) 1834-36

(3) चेरो आंदोलन का काल क्या था ?

(क) 1795-1800 (ख) 1800-1805 (ग) 1857-60 (घ) 1861-65

(4) निम्न में किन्हें आदिविद्रोही की संज्ञा दी गई है ?

(क) सिहो-कान्हों (ख) बिरसा मुंडा (ग) तिलका मांझी (घ) विष्णु मानकी

(5) किस आंदोलन में संघर्ष का संदेश गाँव-गाँव में सखुआ का पत्ता घुमाकर किया जाता था ?

(क) मुंडा विद्रोह (ख) चुआड़ विद्रोह (ग) भूमिज विद्रोह (घ) कोल विद्रोह

(6) तिलका मांझी को कब फाँसी दी गई ?

(क) 1784 (ख) 1785 (ग) 1786 (घ) 1788

(7) निम्न में कौन झारखण्ड का प्रथम सुसंगठित तथा व्यापक जनजाति आंदोलन था ?

(क) मुंडा विद्रोह (ख) कोल विद्रोह (ग) चुआड़ विद्रोह (घ) चेरो विद्रोह

उत्तर—(1) (ख), (2) (ख), (3) (क), (4) (ग), (5) (घ), (6) (ख), 7. (ख)

© JCERT not to be republished

संथाल विद्रोह

कोल विद्रोह के करीब 22 साल बाद 1855-56 में संथाल जनजाति के नेतृत्व में संथाल परगना की पूरी जनता उठी और उसने विद्रोह की आवाज बुलंद की। उस विद्रोह की लपटें संथाल परगना और भागलपुर से लेकर बंगाल की सीमा और छोटानागपुर के हजारीबाग जिले तक फैली।

संथाल विद्रोह का मुख्य कारण था। महाजनों और साहूकारों के शोषण और उससे उपजे असंतोष। ये महाजन और साहुकार दामिन-ए-कोह (गोड्डा, साहेबगा, पाकुड़, दुमका और देवघर) में अपने व्यापार के लिए बहुत बड़ी संख्या में बस गये थे। उन्होंने संथालों का शोषण कर बहुत थोड़े दिनों में बहुत सम्पत्ति जमा कर ली थी। वे बरसात के कुछ महीनों में संथालों को कुछ रुपये, कुछ चावल या कुछ अन्य सामान उधार देते थे और बड़ी चालाकी से कुछ ही दिनों में जीवन भर के लिए उनके भाग्य-विधाता बन जाते थे। कर्ज चुकाने में संथालों को अपनी जमीन से हाथ धोना पड़ता था और कई को कर्ज के बदले गुलामी स्वीकार करनी पड़ती थी।

उस दौर में संथालों के असंतोष की चिनगारी को विद्रोह की ज्वाला में बदला संथाल परगना में भोगनाडीह गाँव के चुन्नू माँझी के चार पुत्रों सिद्धू, कान्हू, चाँद तथा भैरव ने। 13 जून से 17 अगस्त 1855 तक चंद दिनों में ही उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व और पराक्रम से जनता में मुक्ति का ऐसा जज्बा पैदा किया कि अंग्रेजों को संथालों के खिलाफ फौजी कानून की घोषणा करनी पड़ी थी। विद्रोह की भीषण आग बुझाने के लिए लागू सैनिक कानून को 3 जनवरी, 1856 में वापस लिया गया। इस विद्रोह के जनक सिद्धू, कान्हू, चाँद तथा भैरव लोगों के लिए पूजनीय हो गए। आज भी उन्हें झारखण्ड के जननायक के रूप में याद किया जाता है। सिद्धू-कान्हू की गाथाएँ आज भी झारखण्ड के लोगों के लिए ओज एवं शक्ति के प्रेरणास्रोत हैं। प्रत्येक वर्ष इस विद्रोह की याद में राज्य में हूल अर्थात् संथाल विप्लव दिवस 30 जून को मनाया जाता है।

हजारीबाग में उस विप्लव का नेतृत्व लुबिया मांझी, बैस मांझी और अर्जुन मांझी ने संभाला था। गोला, चास, कुजू, बगोदर आदि इलाकों में जनता ने खुल कर विद्रोहियों का साथ दिया। विद्रोहियों ने हजारीबाग जेल तक में आग लगा दी थी। विद्रोह में संथाल और अन्य जातियों के हजारों लोगों ने अपनी कुर्बानी दी। उस विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेज सेना को एड़ी चोटी का पसीना एक करना पड़ा। संथाल विद्रोह को कुचलने के लिए दानपुर से अतिरिक्त सेना बुलायी गई। विद्रोह के बाद ही संथाल बहुल क्षेत्रों को भागलपुर और वीरभूम से अलग कर दिया गया और उसे संथाल परगना नाम से वैधानिक जिला बनाया गया।

© JCERT not to be republished

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें—

(1) कोल विद्रोह को करीब 22 वर्ष बाद .... ई. में संथाल जनजाति के नेतृत्व में संथाल विद्रोह हुआ।

(2) सिद्धू-कान्हू का जन्म संथाल परगना के .... गाँव में हुआ था।

(3) सिद्धू, कान्हू, चाँद और भैरव के पिता का नाम .... था।

(4) संथाल विद्रोह के नायक .... थे।

(5) प्रत्येक वर्ष 30 जून को .... मनाया जाता है।

(6) संथाल विद्रोह को दबाने के लए अंग्रेजों को .... की घोषणा करनी पड़ी।

(7) संथाल विद्रोह को कुचलने के लिए .... से अतिरिक्त सेना बुलायी गई।

उत्तर—(1) 1855-56 ई, (2) भोगनाडीह, (3) चुन्नू माँझी, (4) सिद्धू-कान्हू, (5) हूल दिवस, (6) फौजी कानून, (7) दानापुर।

बिरसा मुंडा आन्दोलन

यह आंदोलन झारखण्ड में सबसे अधिक संगठित और व्यापक माना जाता रहा है। इस आंदोलन के नायक बिरसा मुंडा को भगवान के अवतार रूप में मान्यता मिली है। भगवान बिरसा का जन्म 15 नवम्बर, 1875 ई.

को वर्तमान खूँटी जिला के उलीहातु नामक गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम सुगना मुंडा एवं माँ का नाम करमी मुंडा था। बचपन में ही बिरसा ने अतित में हुआ मुंडा विद्रोह की कहानियाँ सुन ली थी। अपने किशोरावस्था में बिरसा जिन विचारों के संपर्क में आए उनसे काफी गहरे तौर पर प्रभावित थे। बिरसा का प्रारंभिक आंदोलन आदिवासी समाज को सुधारने का आंदोलन था। उन्होंने मुंडाओं से आह्वान किया कि वे शराब पीना छोड़ दे, गाँवा को साफ रखे और डायन व जादू टोने में विश्वास न करें।

राजस्व दर का ऊँचा होना, ईसाई मिशनरियों की दोषपूर्ण नीति, जमींदारों व साहूकारों की शोषक नीति से मुंडा समाज पूरी तरह हतोत्साहित हो चुके थे। ऐसे समय में बिरसा मुंडा नामक युवक मुंडा जनजाति के उत्थान का बीड़ा उठाया। इस युवक की वाणी में ओज था और इसमें तत्कालिन व्यवस्था पर चोट करने की क्षमता भी थी। वह धार्मिक आख्यानों के माध्यम से लोगों में नव चेतना जाग्रत करता। उसके विचारों में लगभग सभी विषयों पर मनन करने की क्षमता थी। सन् 1995 तक वह लगभग छह हजार मुंडाओं को एकत्रित कर उन्हें अपने उद्देश्यों से अवगत कराया। उसने मुंडों जनजाति को नए ओज से भर दिया। उसके प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार थे—

1. अंग्रेज सरकार का पूर्ण दमन।
2. छोटानागपुर सहित सभी अन्य क्षेत्रों से 'दीकुओं' को भगा देना।
3. स्वतन्त्र मुंडा राज्य की स्थापना।

बिरसा मुंडा ने इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सभी मुंडाओं को साहस के साथ इस धर्मयुद्ध में कूदने का आह्वान किया ओर योजना बनाकर साहूकारों, जमींदारों, मिशनरियों तथा दीकुओं पर हमला कर दिया। चारों ओर त्राहि–त्राहि मच गई। कंपनी ने राँची से सेना भेजी और निर्दयतापूर्वक इस विद्रोह को दबाया, बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। राँची के जेल में बीमारी (हैजा) के कारण 9 जून, 1900 को बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई।

> बिरसा मुंडा को आम जनजातियाँ 'धरती आबा' कहती है। बिरसा मुंडा आन्दोलन का अन्य नाम उलगुलान भी है 'उलगुलान' का शाब्दिक अर्थ 'महान विद्रोह' है।

बिरसा मुंडा अपने अल्प जीवन में लोगों को जाग्रत कर दिया था। इस आंदोलन ने अंग्रेज सरकार को जनजातियों के प्रति संवेदनशील रहने को विवश किया। इसी विद्रोह के प्रभावस्वरूप 1905 ई. में खूँटी के अनुमण्डल बनाया गया एवं 11 नवम्बर 1908 ई. को छोटानागरपुर काश्तकारी एक्ट (chhotanagpur tenancy act) पारित किया गया। 'कटोंग बाबा कटोंग' मुण्डा विद्रोह के गीत थे।

झाराखण्ड में संस्कृति, धर्म और राजनीति के सूत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और उन सूत्रों से आदिवासी समाज में सामूहिक स्वशासन की लोकतांत्रिक प्रणालियाँ सदियों, पहले विकसित हो चुकी थी। यह आंदोलन पूर्व राजनीतिक स्वधीनता के आंदोलन के रूप में प्रकट हुआ। अंग्रेज हुकूमत बिरसा आंदोलन को सरदार विद्रोह की कड़ी के रूप में देखती थी। लेकिन बिरसा के नेतृत्व में यह सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के

© JCERT not to be republished

लिए पूर्ण स्वायत्तता और राजनीतिक स्वतन्त्रता का आंदोलन बन गया था। बिरसा मुंडा उलगुलान का नेतृत्व किया। उन्होंने ब्रिटिश सत्ता को अस्वीकार करते हुए सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण और विदेशी सत्ता के खिलाफ ऐसे विराट आंदोलन का सूत्रपात किया कि पूरा झारखण्ड क्षेत्र उनके नेतृत्व में मुक्ति के लिए अचानक उठ खड़ा हुआ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न—

(क) सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ) लिखें।

(1) बिरसा मुंडा का जन्म कब हुआ था—

(क) 15 नवम्बर, 1874 (ख) 15 नवम्बर, 1875

(ग) 15 नवम्बर, 1876 (घ) 15 नवम्बर, 1877

(2) बिरसा मुंडा का जन्म किस गाँव में हुआ था—

(क) उलीहातु (ख) भोगनाडीह (ग) बसिया (घ) इनमें से नहीं

(3) बिरसा मुंडा के पिता का क्या नाम था—

(क) करमा मुंडा (ख) विषणु मुंडा (ग) सुगना मुंडा (घ) जतरा मुंडा

(4) बिरसा मुंडा का मृत्यु कब हुई—

(क) 30 जून, 1900 (ख) 19 जून, 1900 (ग) 29 जून, 1900 (घ) 9 जून 1900

(5) बिरसा मुंडा का जन्म किस जिला में हुआ था।

(क) पलामू (ख) खूँटी (ग) लोहरदगा (घ) गुगला

उत्तर—(1) ख, (2) क, (3) ग, (4) घ, (5) ख।

© JCERT not to be republished

टाना भगत आंदोलन

झारखण्ड के जनजातीय आंदोलनों में टाना भगत आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह पिछले सभी जनजातीय विद्रोहों से कुछ अलग था। यह धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में पनपा और विकसित हुआ। लेकिन जल्द ही उसका राजनीतिक स्वरूप सामने आ गया। 1913-14 ई. में गुमला जिले के विशुनपुर थाना के चिंगरी नावाटोली गाँव के जतरा उराँव के नेतृत्व में शुरू हुए इस आंदोलन के तीन मुद्दे स्पष्ट थे—

(1) स्वशासन का अधिकार

(2) सारी जमीन ईश्वर की है, इसलिए उस पर लगान का विरोध

(3) आदर्श समाज की स्थापना के लिए मनुष्य-मनुष्य के बीच गैरबरावरी की खात्मा

धार्मिक पुनरूथान और जातीय परिष्कर के दौर से गुजरते हुए आंदोलन जब शोषण मुक्ति के संकल्प के रूप में व्यक्त हो रहा था, तो ठीक उसी वक्त देश में राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व की बागडोर सत्याग्रही गाँधी के हाथ में आ चुकी थी। टाना भगत आंदोलन में शामिल नेता और कार्यकर्त्ता गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित हुए। स्थानीय माना जाने वाला आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन का महत्वपूर्ण अंग बन गया।

टाना भगतों के स्थानीय आंदोलन ने उसके पारम्परिक जीवन में आमूल परिवर्तन कर दिया था। आंदोलन के क्रम में टाना भगतों ने रहन-सहन, खान-पान और निजी व सामाजिक रीति रिवाजों में परिवर्तन कर एक नया मंच ही कायम कर लिया था। उनके लिए शराब व मांस का सेवन वर्जित था। रंगीन कपड़े व गहने धारण करना शरीर को गोदना वर्जित था।

शिकार खेलना, अखाड़ा में नाचना और जतरा में भाग लेने पर प्रतिबंध था। आजादी के संघर्ष के लिए भी सादा जीवन और उच्च विचार की राह की तालाश में टाना भगत जब गाँधी के सम्पर्क में आए तो उनको महसूस हुआ कि उनके और गाँधी के विचारों में साम्यता है। टाना भगतों ने अपने जिस आंदोलन को आर्थिक और धार्मिक आधारों पर शुरू किया, उसे देश की आजादी के राजनीतिक आंदोलन का हिस्सा बनाने के क्रम में चरखा चलाना और शादी के सफेद कपड़े पहनना सहजता से स्वीकार किया। टाना भगतों ने महात्मा गाँधी को अपना नेता माना और उनके नेतृत्व में आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का संकल्प लिया।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य—पृष्ठ. स. -15 (सबसे पीछे)

(अभ्यासार्थ प्रश्न)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न—

(क) सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ) लिखें।

(1) फ्रांसिस बुकानन कौन था ?

(क) यात्री (ख) वैज्ञानिक (ग) चिकित्सक (घ) अधिकारी

(2) दीकू किनकों कहा जाता था ?

(क) पहाड़ियों को (ख) भीलों को (ग) संथालों को (घ) बाहरी लोगों को

(3) वन अधिनियम कब पारित हुआ—

(क) 1862 (ख) 1863 (ग) 1865 (घ) 1868

(4) तिलका माँझी, का विद्रोह कब हुआ—

(क) 1782 (ख) 1783 (ग) 1784 (घ) 1785

(5) छोटानागपुर क्षेत्र में हुए कोल विद्रोह के नायक कौन थे—

(क) विरसा मुंडा (ख) सिंदराय और विदंराय

(ग) तिलका मांझी (घ) जतरा भगत

(6) संथाल विद्रोह के जनक कौन थे—

(क) विरसा मुंडा (ख) तिलका माँझी (ग) सिद्दू-कान्हू (घ) वीर बुद्ध भगत

(7) कौन-सा आन्दोलन राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक उद्देश्यों से प्रेरित था ?

(क) जोहार आंदोलन (ख) हूल आंदोलन

(ग) उलगुलान आंदोलन (घ) संथाल आंदोलन

(8) उलगुलान विद्रोह का संबंध किससे है ?

(क) जतरा भगत (ख) बिरसा मुंडा (ग) तिलका मांझी (घ) बुधु भगत

(9) मुंडा विद्रोह का प्रारंभिक स्वरूप था—

(क) व्यक्तिवादी (ख) समाजवादी (ग) सुधारवादी (घ) आदर्शवादी

(10) मुंडा विद्रोह का प्रारंभ कब हुआ ?

(क) 1875 (ख) 1890 (ग) 1895 (घ) 1879

(11) 'कटोंग बाबा कटोंग' किस विद्रोह के गीत थे ?

(क) संथाल विद्रोह (ख) मुंडा विद्रोह (ग) हो विद्रोह (घ) कोल विद्रोह

(12) वर्ष 1899-1900 के मुंडा क्रांति का नेता कौन-था ?

(क) कान्हू (ख) सिद्धू (ग) बिरसा मुंडा (घ) जतरा भगत

(13) बिरसा मुंडा का निधन कब हुआ ?

(क) 1 जून, 1900 (ख) 9 जून, 1900 (ग) 8 जून, 1900 (घ) 4 जून, 1900

(14) बिरसा मुंडा को आम जनजाति क्या कहती थी ?

(क) दिशुम गुरु (ख) धरती आबा (ग) भगवान बिरसा (घ) (ख) और (ग)

© JCERT not to be republished

(15) छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम कब लागू किया गया ?

(क) 1918 (ख) 5 दिसम्बर, 1903

(ग) 1908 (घ) इनमें से कोई नही

उत्तर—(1) ग, (2) घ, (3) ग, (4) ख, (5) ख, (6) ग, (7) ग, (8) ख, (9) ग, (10) ग, (11) ख, (12) ग, (13) ख, (14) घ, (15) ग।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न—

(1) बुकानन की डायरी से क्या जानकारी मिलती है ?

(2) आदिवासी मुखिया के कर्त्तव्य क्या होते थे ?

(3) आदिवासी अपने को जंगल की संतान क्यों मानते थे ?

(4) आदिवासी दीकुओं से क्यों असंतुष्ट थे ?

(5) संथाल परगना किन क्षेत्रों को मिलाकर बनाया गया ?

(6) बिरसा मुंण्डा का जन्म कब हुआ ?

(7) अंग्रेजों ने बिरसा मुंडा को क्यों गिरफ्तार किया ?

(8) टाना भगत किसके अनुयायी थे ?

लघु उत्तरीय प्रश्न—

(1) संथालों ने अंग्रेजों का विरोध क्यों किया ?

(2) आदिवासियों का शोषण कौन करते थे ?

(3) टाना भगतों का आंदोलन अन्य आंदोलन से अलग था कैसे ?

(4) बिरसा मुंडा की मुत्यु कैसे हुई ?

अन्त में

स्मरणीय तथ्य

- झारखण्ड में विभिन्न जनजातीय समूह की जनसंख्या राज्य की कुल जनसंख्या का 26.2 प्रतिशत है।
- झारखण्ड में मुख्य रूप से 32 प्रकार की जनजातियाँ निवास करती हैं।
- संथाली भाषा की लिपि ओलचिकी है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संथाल जनजाति झारखण्ड की सबसे बड़ी जनजाति है।
- झारखण्ड की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति उराँव है।

© JCERT not to be republished

- घुमकुड़िया वस्तुतः जनजातीय प्रशिक्षण केन्द्र था।
- अखड़ा अराँवों की एक महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक केन्द्र है।
- उराँव जनजाति कुरूख भाषा बोलती है।
- कुरूख का शाब्दिक अर्थ मनुष्य है।
- कोल विद्रोह का प्रमुख नेता बुद्धू भगत था।
- संथाल विद्रोह - 1855-1856 में हुआ था।
- सिद्धू-कान्हू संथाल विद्रोह के मुख्य नेता था।
- संथाल विद्रोह के याद में प्रतिवर्ष 30 जून को 'हूल दिवस' मनाया जाता है।
- बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को हुआ था।
- बिरसा मुंडा का जन्म खूँटी जिला के उलीहातु नामक गाँव में हुआ था।
- हैजा के कारण 9 जून, 1900 को जेल में बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई।

© JCERT not to be republished